खट्टर की शाही सवारी निकली बल्लबगढ़ के बाज़ार, भाड़े की भीड़ से कराया सत्कार

बल्लबगढ (म.मो.) वीरवार 14 मार्च को मुख्यमंत्री खट्टर की सवारी पूरे शाही अंदाज में शहर के मुख्य बाज़ारों से निकली। करीब साढे तीन बजे खट्टर एक खुले वाहन पर खड़े हुए, उनके साथ स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर, उद्योग एवं पर्यावरण मंत्री विपुल गोयल, स्थानीय विधायक मूल चंद शर्मा तथा ज़िला भाजपा अध्यक्ष गोपाल शर्मा सवार होकर निकले। ज्यों ही खट्टर का वाहन चलने लगा उसकी फूक निकल गयी, लगता है खट्टर जी मंत्र-जाप ठीक से कर के नहीं आये थे। शायद इसी लिये उनके स्वागत हेतु बनाया गया एक स्वागत द्वार भी गिर गया। बताते हैं दो सांडों, जिन्हें गौशाला में जगह नहीं मिली होगी, टक्करम-टक्करा होकर द्वार को हिला दिया और हवा के एक झोंके ने उसे गिरा दिया। यह सब अपशकुन था या शुभ शगुन, यह तो खट्टर जी जानें।

खट्टर के साथ वाहन में सवार होकर अपना भाव बढाने को यूं तो वहां अनेकों भाजपाई नेता मौजूद थे, परन्तु सबसे अधिक आतुर पृथला से विधायक टेक चन्द शर्मा थे। इन्होंने चुनाव तो लड़ा था मायावती की बसपा टिकट से परन्तु माल-मलाई के चक्कर में

पहले दिन से ही खट्टर सरकार की गोद में जा बैठे। इसके चलते शर्मा द्वारा चंद वोटों से हराये गये भाजपा के उम्मीदवार नयनपाल रावत की कदर खट्टर ने काफ़ी घटा दी। लेकिन इस अवसर पर खट्टर ने टेकचंद को भी अपने वाहन पर चढने नहीं दिया।

स्वागत के नाम पर नेताओं ने अपने-अपने समर्थकों के माध्यम से जगह-जगह भाड़े की भीड़ खड़ी कर रखी थी। बीते पांच साल में खट्टर या मोदी सरकार ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके लिये क्षेत्र की जनता उनका स्वागत एवं जयजयकार करे। स्कूलों व अस्पतालों की हालत बद से बद्तर होती जा रही है। कानून-व्यवस्था एवं नागरिकों की सुरक्षा भगवान भरोसे चल रही है। भ्रष्टाचार सामाप्त करने का सरकारी दावा कितना खोखला है यह किसी भी नागरिक से छिपा नहीं है। लगातार हो रही चोरियों को लेकर दुकानदारों ने कई बार प्रदर्शन किये हैं; लेकिन पुलिस-प्रशासन की कार्यशैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। परिवर्तन आ भी कैसे सकता है जब मलाईदार तैनातियां सरेआम नीलाम होती हों। इस माहौल में खट्टर का स्वागत होना तो काले झंडों से चाहिये था, परंतु मृतप्राय:विपक्षी संगठनों के चलते खट्टर यहां से अपना मन बहला कर जाने में सफ़ल हो गये।

जातियों में बांट दिये गये समाज में विभिन्न जातियों के ठेकेदारों ने अपनी-अपनी जाति के नाम से खट्टर का स्वागत किया। कहीं पंजाबी सभा की ओर से उन्हें गदा भेंट की गयी तो ब्राह्मणों की ओर से परशुराम की मूर्ति तो ठाकुरों की ओर से पगड़ी। इसी तरह व्यापारी वर्ग द्वारा भी उन्हें भेंट आदि चढाई गयी। ऐसे अवसरों पर जातियों के ठेकेदार अपने सजातिय भाईयों को मोहरा बना कर सत्ताधारियों को प्रसन्न करते हुए यह जताने का प्रयास करते हैं कि जाति के लोग उनकी मुट्ठी में हैं और वे सत्ता के साथ। इस तरह के प्रदर्शन से उनकी छोटी-मोटी दलाली चल जाती है।

कुल मिला कर खट्टर एवं भाजपा का यह एक चुनावी प्रचार था। उन्हें लगता है कि इस तरह के प्रचार से जनता उनके संसदीय प्रत्याशी कृष्णपाल गूजर को वोट देकर फ़िर से संसद में भेजने की ग़लती दोहरा देंगे।

खट्टर के सामने ही खुल गयी पुलिस की पोल

खट्टर के स्वागत के लिये जुटाई गयी भीड़ से करीब 60 लोगों की जेबें जेब-तराशों ने साफ कर दी। खट्टर की सेवा से फारिग होकर ये तमाम लोग थाना शहर में जमा हो गये अपनी शिकायत दर्ज कराने की। पुलिस के लिए इतनी बड़ी संख्या में एक साथ इतनी रिपोर्ट दर्ज करना कोई आसान नहीं था, वैसे भी पुलिस आम आदमी की शिकायत दर्ज ही कहां करती है। लेकिन इतनी बड़ी संख्या में नारेबाजी करती भीड़ का सामना करना भी आसान बात नहीं था। लिहाजा रिपोर्ट दर्ज करने का आश्वासन देकर पुलिस ने अपना पिंड छुड़वाया।

चुनाव का दंगल सज गया, शिकारी हैं तैयार, मजलूम जनता शिकार होने को मजबूर

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

अगले पांच साल तक जनता को बेवकूफ़ बना कर कौन लूटेगा, यानी देश को लूटने का पटा किसको मिलने वाला है, इसका फ़ैसला करने की घड़ी आ गयी है। अप्रैल 11 से प्रक्रिया शुरू होगी और 23 मई को तय हो जायेगा कि अगले पांच साल तक कौन सा गिरोह इस देश को लूटेगा।

राष्ट्रीय स्तर पर दो बड़े गिरोह-भारतीय जनता पार्टी व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हैं। दोनों ही गिरोहों ने अपने आपको मजबूत बनाने एवं जीत सुनिश्चित करने के लिये राज्य स्तरीय अनेकों छोटे-बड़े गिरोहों को अपने साथ बांध रखा है जिसे गठबंधन अथवा महागठबंधन का नाम दिया गया है। सबसे मजे की बात तो यह है कि दोनों ही गिरोह अपने-अपने सिद्धांतों, आदर्शों एवं नीतियों की दुहाई तो देते हैं परंतु इनके न तो कोई सिद्धांत हैं और न ही नीतियां। बस मोटा सा एक ही सिद्धांत है दोनों का, बड़े से बड़े घोटाले करके देश की जनता को लूटना। इसी सिद्धांत के चलते दोनों गिरोहों में से एक दूसरे के यहां शिकारियों का आवागमन लगा रहता है।

अपने मताधिकार का प्रयोग कर इन्हें सत्ता में लाने वाली जनता की स्थिति उस मछली की भांति है जिसे शिकारी द्वारा पानी में डाले गये कांटे पर लगा मांस का छोटा सा टुकड़ा तो दिखाई देता है लेकिन उसके नीचे छिपा कांटा नहीं दिखता। मांस का टुकड़ा खाने गयी मछली खुद कांटे में फ़ंस कर शिकार हो जाती है। ठीक इसी तरह मतदान से पहले दोनों, तीनों या इससे भी अधिक शिकारियों द्वारा शराब व पैसे के रूप में फ़ेंके गये कांटे का शिकार होकर किसी न किसी गिरोह को अपना सत्यानाश करने का अधिकार स्वयं दे देते हैं।

सन् 2004 से 2014 तक के कांग्रेसी कुशासन से तंग आई जनता ने एक बेहतर विकल्प के रूप में भारतीय जनता पार्टी को चुना; क्योंकि देश के बड़े पूंजीपतियों के अकूत धन बल पर इसी पार्टी को बेहतरीन बताया गया था। सत्ता में आने से पूर्व इस पार्टी ने महंगाई, बेरोजगारी, काले धन व किसानों की बेहतरी जैसे मुद्दे उछाले थे। जिस पेट्रोल की जरा सी महंगाई पर यह पार्टी सड़कों पर उतर आती थी उसी ने सत्तारूढ़ होकर पेट्रोलियम की महंगाई के सारे रिकार्ड तोड़ डाले। काले धन को 100 दिन के भीतर देश में लाकर हर नागरिक को 15-15 लाख देने के वायदे को चुनावी जुमला बता दिया। जिस आधार नम्बर व जीएसटी को लेकर यह पार्टी कांग्रेस का विरोध करती थी उन्हीं को और भी घृणित रूप से जनता पर लागू कर दिया। जिस आतंकवाद के लिये भाजपा पानी पी-पी कर कांग्रेस को कोसती थी वह बीते पांच वर्षों में दो गुणे से भी ज़्यादा हो गया। दो करोड़ सालाना रोज़गार देना तो दूर नोट बंदी ने लगे लगाये रोजगार ही खत्म कर दिये।

बीते पांच साल के अपने शासन-काल में देश की पूरी अर्थव्यवस्था का बंटाधार करने व विकास की जगह विनाश कर डालने के बाद चुनाव जीतने के लिये भाजपा के पास एक ही बड़ा हथकंडा बचा रह गया हिन्दू वोटों का ध्रुवीकरण। इसके लिये राम मंदिर का मुद्दा उठाने का प्रयास विफ़ल रहा तो उग्र राष्ट्रवाद को मुद्दा बनाने के लिये पाकिस्तान से छेड़छाड़ शुरू कर दी। सर्जिकल स्ट्राइक को अपनी बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश किया जाने लगा। जनता के तमाम मुद्दों व अपनी तमाम विफ़लताओं को अंध राष्ट्रवाद की चादर से ढकने का प्रयास किया जाने लगा। सरकार के आदेश पर देश की सेनायें पहले भी पराक्रम दिखाती रही हैं लेकिन प्रधानमंत्री मोदी सेना के तथाकथित पराक्रम का सेहरा अपने सिर पर ऐसे बांधे घूम रहे हैं मानों सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय सेनाओं ने नहीं आरएसएस के स्वयंसेवकों ने किया हो तथा इन्हीं की बदौलत आज देश सुरक्षित है। समझ यह नहीं आ रहा कि इन तथाकथित सर्जिकल स्ट्राइकों से लाभ क्या हुआ? आतंकी हमले ज्यों के त्यों कायम हैं। हर रोज़ मुंहतोड़ जवाब दिया जा रहा है आतंकवाद की कमर तोड़ दी जाती है उसके बावजूद वारदातों में कहीं कोई कमी नज़र नहीं आ रही।

इसमें कोई दो राय नहीं कि भले तो कांग्रेसी भी नहीं यदि वे भले होते और 10 साल के शासन में घोटालों के रिकॉर्ड कायम न किये होते, जनता को सुशासन दिया होता तो ये भाजपाई कभी न पनपते। परन्तु भाजपाई कांग्रेसियों से भी बढ कर झूठे, मक्कार और घोटालेबाज तो साबित हो ही रहे हैं, साथ में पूरे देश का साम्प्रदायिक सौहार्द भी बिगाड़ दिया। सत्ता में बने रहने के लिये जनता को धर्म व जातियों के नाम पर बांटा जा रहा है। बात करते हैं अखंड भारत की और ले जा रहे हैं इसे विखंडन की ओर।

राजनेता झूठे वायदे करते हैं, यह कोई नई अथवा छिपी बात नहीं है। परन्तु भाजपाई खास कर इनके पीएम मोदी तो सच बोल ही नहीं सकते। वे लालकिले की प्राचीर से छाती ठोक कर झूठ इतने जोर से बोल सकते हैं जितने ज़ोर से कोई सच भी नहीं बोलता। दरअसल यही आरएसएस का गुरूमंत्र है कि एक के बाद एक झूठ बोलते जाओ और पूरे ज़ोर से बोलते जाओ फ़िर उसे गोदी मीडिया के द्वारा बार-बार प्रचारित-प्रसारित कराते जाओ।

जनता के पास न तो इतने साधन होते हैं और न इतनी समझ कि वे सच्चाई तक पहुंच सकें। भाजपा सरकार द्वारा बीते पांच साल के इस काल में एक भी उपलब्धि ऐसी नहीं है जो सच की कसौटी पर खरी उतर सके। सब की सब छलावों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। इसी लिये अब आखिरी हथकंडे के तौर पर भाजपा उग्र राष्ट्रवाद का सहारा ले रही है। यही हथकंडा हिटलर ने भी जर्मनी में अपनाया था जिसका परिणाम पूरी दुनिया को भुगतना पड़ा था। इन हालात में देश के मतदाता को मछली की तरह मछेरे के कांटे में फंसने की बजाय पूरी तरह से जागरूक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिये।

नेताओं का जूता नेताओं के सिर पर बजा

कवि सम्मेलन बुलाया तो था अपने यशोगान के लिये, लेकिन पिटवा ली अपनी भद्द

ग्राऊंड जीरो से विशेष संवाददाता

सैन्य शौर्य सम्मान समारोह की आड़ में सत्ताधारी भाजपा की विधायक सीमा त्रिखा ने 15 मार्च 2019 की शाम स्थानीय दशहरा ग्राऊंड में एक भव्य नाटक रच कर अपनी और अपनी पार्टी की भयंकर भद्द पिटवा कर रख दी। वोट बैंक और मोदी गुणगान के लिये रचा गया यह नाटक अपना मकसद हासिल करने में पूरी तरह से नाकाम रहा।

इस नाटकबाज़ी के मुख्य कलाकार 'महाकवि' कुमार विश्वास थे। इन्होंने अपनी लच्छेदार चमचा शैली में कृष्णपाल गूजर, जुमलेबाज मोदी और आयोजकों की जम कर धुलाई की। कुमार विश्वास ने आयोजकों से मोटी फ़ीस वसूल कर भी अपने दमदार चुटकुलों लफ़्फ़ाजी और खूबसूरत अंदाज में लगभग सारी राजनीतिक पार्टियों को साथ में लपेट कर सम्पूर्ण सियासी व्यवस्था को खुल कर जूतों से नवाज़ा।

पिछले दिनों अयोध्या विवाद पर आये फ़ैसले के बाद तीन-दिन चले लोकसभा सत्र पर चुटकी लेते हुए कुमार विश्वास ने सामने बैठे केन्द्रीय मंत्री से पूछा कि इस बहुचर्चित सत्र ने देश को आंख मारने और गले लगने के अलावा क्या दिया? उन्होंने आगे कहा कि देश को पूरी तरह से बिके टीवी चैनलों ने अगले 6 दिनों तक इसके अलावा कुछ नहीं दिखाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि भूतपूर्व सैन्य अधिकारियों और शहीदों के परिवारों का सम्मान एक काबिले तारीफ कदम था जो तीन घंटे से अधिक चलने वाले कार्यक्रम में केवल 20 मिनट का समय ही पा सका।

मंच से बार-बार घोषणा की जा रही थी कि दर्शक दीर्घा में आगे की दो कतारें

चुटकुलों का महाकवि कुमार विश्वास : भाजपा के साथ विधायक सीमा त्रिखा का परिहास

केवल सैन्य अधिकारियों और शहीद परिवारों के लिये सुरक्षित हैं जिस पर कृपया अन्य लोग न बैठें। परन्तु इस घोषणा का भयंकर मजाक तब उड़ा जब सभा में देर से आने वाले कुछ पत्रकारों ने अपनी हेकड़ी का प्रदर्शन करते हुए साईड के सोफ़े उठवा कर सैन्य परिवारों के पंक्तियों से आगे रखवाए और अपनी अहमियत शक्ति और बेशर्मी का भौन्डा प्रदर्शन किया।

यह भी देखने को मिला कि शहर के कई विशिष्ट व्यक्तियों को पीछे की सीटों पर बैठना पड़ा जिस के वे आदी नहीं हैं।

मंच संचालन कर रहे कवि दिनेश रघुवंशी ने मंच पर बार-बार माइक की खराबी से नाराज होकर लगभग दस बार माइक बदलवा कर एक नया रिकार्ड कायम किया। लगभग 25 लाख खर्च वाले इस आयोजन के नतीजे कम से कम आयोजकों के लिये बहुत ही निराशाजनक रहे।

चुनाव घोषणा के बाद आचार संहिता को ठोकर पर रख किया यह आयोजन भाजपा को कुछ भी दिलवाने में कामयाब नहीं हुआ। सबसे पहले मंच पर आये कवियों ने विपक्षी नेताओं और दलों के लिये ''चाटने वाले कुत्तों'' जैसे शब्दों का प्रयोग किया। जिससे कुछ लोगों के चेहरों पर नफ़रत के भाव देखे जा सकते थे। ले दे कर कवियों ने एक दूसरे की बेहिसाब तारीफ़ करके न सिर्फ़ अपना मज़ाक उड़वाया बल्कि साहित्यिक स्तर का बहुत घटिया और गिरा हुआ प्रदर्शन किया।

आमंत्रित कवियों में डॉ. सरिता शर्मा (भूतपूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश) और हास्य कवि सुदीप भोला ने श्रोताओं को निराश किया। कुमार विश्वास ने अपने दो घन्टे के समय में केवल दो कवितायें पढ़ी और अधिकतर समय चुटकुलों और व्यंग्य को समर्पित किया। अगले के पास पैसा बटोरने के अलावा अब यही सब तो बचा है। इस तरह अपनी ओर से कुमार विश्वास ने अपनी हाज़री का पूरा हक अदा किया।

नरेन्द्र मोदी, अमित शाह और लाल कृष्ण आडवाणी : गुजरात का हत्यारा बाबू बजरंगी अपने तीन शुभचिंतकों के साथ!

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06